• कविताएं...

अगर–मगर

अगर मगर दो भाई थे,
लड़ते खूब लड़ाई थे।
अगर मगर से छोटा था,
मगर अगर से खोटा था।
अगर मगर कुछ कहता था,
मगर नहीं चुप रहता था।
बोल बीच में पड़ता था,
और अगर से लड़ता था।
अगर एक दिन झल्लाया,
गुस्से में भरकर आया।
और मगर पर टूट पड़ा,
हुई खूब गुत्थम-गुत्था।
छिड़ा महाभारत भारी,
गिरीं मेज-कुर्सी सारी।
माँ यह सुनकर घबराई,
बेलन ले बाहर आई!
दोनों के दो-दो जड़कर,
अलग दिए कर अगर-मगर।
खबरदार जो कभी लड़े,
बंद करो यह सब झगड़े।
एक ओर था अगर पड़ा,
मगर दूसरी ओर खड़ा।

■ निरंकार देव सेवक

अगर

खूब बड़ा-सा अगर कहीं,
संदूक एक मैं पा जाता।
जिसमें दुनिया भर का चिढ़ना,
गुस्सा आदि समा जाता।
तो मैं सबका क्रोध, घूरना,
डांट और फटकार सभी।
छीन-छीनकर भरता उसमें,
पाता जिसको जहां जभी।
तब ताला मजबूत लगाकर,
उसे बंद कर देता मैं।
दुनिया के सबसे गहरे
सागर में उसे डुबा आता
तब न किसी बच्चे को कोई-
कभी डांटता, धमकाता!

■ रमापति शुक्ल

• चुटकुले...

पापा : बेटा, इस बार 90% से ऊपर नंबर आने चाहिए।
बेटा : नहीं पापा, इस बार तो मैं 100% लाऊंगा!
पापा : क्यों मजाक कर रहे हो?
बेटा : शुरुआत किसने की थी पापा?

बंता : यार, शादी के बाद तेरी जिंदगी में क्या बदलाव आया?
संता : पहले मैं अकेले ही अपनी गलतियों पर पछताता था, अब एक परमानेंट एडवाइजर मिल गई है जो हर वक्त मेरी गलतियां याद दिलाती रहती है!

• जानकारी...

नेपाल में जलप्रलय

नेपाल की असुरक्षा के पीछे सबसे बड़ी वजह इसका भूगोल है। यह देश अपेक्षाकृत कम दूरी में उच्च हिमालय से लेकर अपेक्षाकृत समतल तराई के मैदानों तक फैला हुआ है। पहाड़ों में काफी ज्यादा ढलान है। इस वजह से जब ऊंचाई पर भारी बारिश होती है तो पानी तेजी से नीचे की तरफ बढ़ता है। धीरे-धीरे एक बड़े क्षेत्र में फैलने के बजाय पानी की भारी मात्रा छोटे समय में

नदी और बस्ती तक पहुंच सकती है। इससे अचानक बाढ़ आ सकती है।

हिमालय अपने आप भी भूवैज्ञानिक रूप से जवान है और अभी भी उभर रहा है। उनकी चट्टान और ढलान तुलनात्मक रूप से नाजुक और अस्थिर हैं। भारी बारिश के दौरान पानी मिट्टी और चट्टान में घुस जाता है। इससे उनका वजन बढ़ जाता है और ढलान की स्थिरता कम हो जाती है। इससे भूस्खलन हो सकता है। मौसम के बदलते मिजाज ने खतरे की एक और परत को जोड़ दिया है। नेपाल का मानसून कम समय में काफी ज्यादा तीव्र वर्षा पैदा कर सकता है। जब कुछ घंटे के अंदर काफी ज्यादा मात्रा में बारिश होती है तो नदी और जल निकासी प्रणाली पानी में अचानक वृद्धि को समायोजित करने में असमर्थ हो सकती हैं। जब एक बार मिट्टी में पानी भर जाता है तो भूस्खलन की संभावना काफी ज्यादा हो जाती है। खासकर उन जगहों पर जहां सड़क और निर्माण ने पहले ही प्राकृतिक ढलानों को कमजोर कर दिया है। बढ़ते तापमान का असर हिमालय क्षेत्र पर भी पड़ रहा है. जैसे-जैसे ग्लेशियर पिघल रहे हैं पानी ऊंचाई वाली हिमनदी झीलों में जमा हो रहा है। कुछ झीलें बर्फ, चट्टान और तलछट की प्राकृतिक संरचना द्वारा रुकी हुई है. अगर ऐसा कोई प्राकृतिक अवरोध ढह जाता है तो भारी मात्रा में पानी अचानक नीचे की तरफ बह सकता है। इस घटना को ग्लेशियर लेक आउटबर्स्ट फ्लड के रूप में जाना जाता ह। नेपाल हिमालय से या फिर उसके आसपास से निकलने वाली सैकड़ों नदियों और नालों से होकर गुजरता है। कोशी, गंडक, करनाली और बागमती जैसी बड़ी नदियां भारी मात्रा में पानी मैदानी इलाकों की तरफ ले जाती हैं। मानसून के दौरान उनके जल ग्रहण क्षेत्र के अलग-अलग हिस्सों में भारी बारिश की वजह से जल स्तर तेजी से बढ़ सकता है। जब कई नदियों में एक साथ तेज प्रवाह होता है तो बाढ़ का खतरा काफी ज्यादा बढ़ जाता है। समस्या तब और भी ज्यादा मुश्किल हो जाती है जब भूस्खलन से नदी मार्ग रुक जाता है। ऐसी रूकावटों के पीछे पानी अस्थायी रूप से जमा हो सकता है और फिर रुकावट टूटने पर नीचे की तरफ बह सकता है। इसी के साथ मानवीय गतिविधियों ने भी पर्वतीय समुदाय की बढ़ती असुरक्षा में पूरा योगदान दिया है। सड़क, होटल, जल विद्युत परियोजना और दूसरे बुनियादी ढांचे का निर्माण अक्सर पहाड़ी ढलानों को काटकर किया जाता है। अगर इस तरह के निर्माण को उचित भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण, जल निकासी प्रणाली और ढलान स्थिरीकरण उपाय द्वारा समर्थित नहीं किया जाता तो यह पहाड़ को कमजोर कर सकता है। भारी बारिश इन अशांत ढलानों को भूस्खलन-प्रवण क्षेत्र में बदल सकती है।

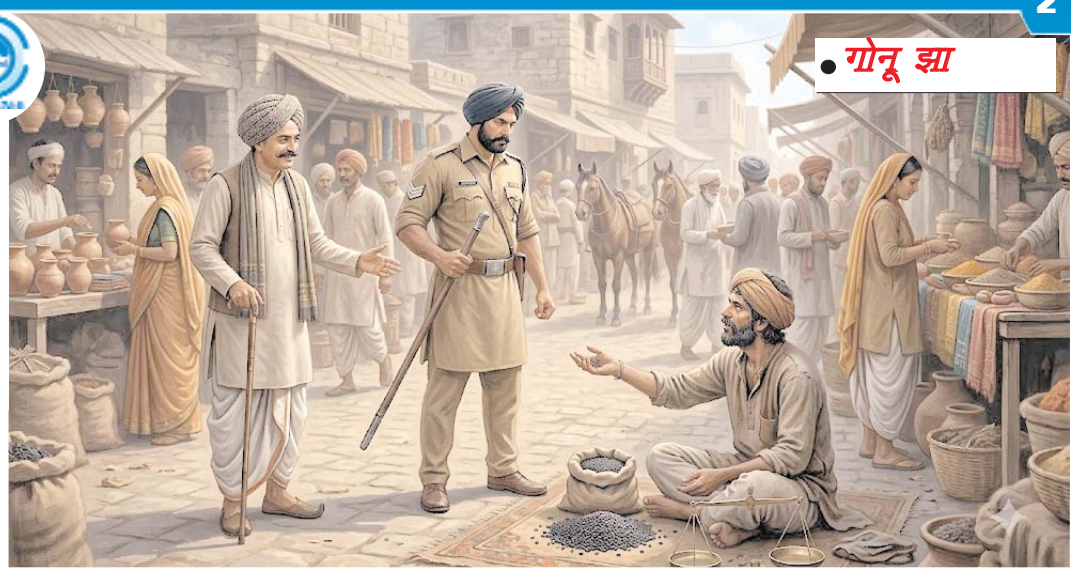

• गोनू झा

गोनू झा को समझते देर न लगी कि चोर होंगे। आहट कुछ टटोले जाने से पैदा हो रही थी। ओसारे में कई 'माठ' पड़े थे जिनमें अनाज रखे गए थे।

गोनू झा ने 'अकान' कर समझा कि माठ में रखे 'नपना' के टकराने से खट–पट की आवाज पैदा हो रही है जिससे उनकी निद्रा भंग हुई थी। गोनू झा के दिमाग में अचानक एक विचार कौंधा और वे झटके से उठे और पलंग पर बैठकर अपनी पत्नी को जगाने लगे...

रात का भाव

गोनू झा एक रात सोए हुए थे। उनकी पत्नी गहरी नींद में उसी पलंग पर सो रही थी जिस पर गोनू झा सोए हुए थे। गोनू झा कच्ची नींद में थे।

कहीं से आ रही खट- पट की आवाज से उनकी नींद उचट गई। उन्होंने ध्यान देकर इस आवाज को समझने की कोशिश की। आवाज बाहर वाले ओसारे से आ रही थी।

गोनू झा को समझते देर न लगी कि चोर होंगे। आहट कुछ टटोले जाने से पैदा हो रही थी। ओसारे में कई 'माठ' पड़े थे जिनमें अनाज रखे गए थे। गोनू झा ने 'अकान' कर समझा कि माठ में रखे 'नपना' के टकराने से खट-पट की आवाज पैदा हो रही है जिससे उनकी निद्रा भंग हुई थी।

गोनू झा के दिमाग में अचानक एक विचार कौंधा और वे झटके से उठे और पलंग पर बैठकर अपनी पत्नी को जगाने लगे। पंडिताइन के शरीर को जोरों से झकझोरते हुए गोनू झा ने आवाज लगानी शुरू कर दी - 'अरे उठो भाग्यवान। जल्दी उठो। नहीं तो बड़ा अनर्थ हो जाएगा।'

पंडिताइन गहरी नींद में थी। दिन भर की थकी - माँदी। वह कच्ची नींद से जगाए जाने से झल्ला गई - 'ओह, सोने क्यों नहीं देते?'

'अरे उठ भी! कहीं लाखों का नुकसान न हो जाए।' गोनू झा ने एक - एक शब्द चबाते हुए कहा।

लाखों का नुकसान की बात सुनकर पंडिताइन थोड़ा सजग हुई और बिस्तर पर उठकर बैठ गई।

उधर चोर जो 'माठ' से अनाज चुराने की ब्योंत में लगा था, गोनू झा के मुँह से निकले लाखों शब्द सुनकर आगे की बात सुनने के लिए पैर चाँपते हुए खिड़की से कान सटाकर खड़ा हो गया।

अमावास की रात के घने अन्धकार में उसे इतना इत्मीनान था कि भीतर से कोई उसे देखना भी चाहे तो देख नहीं सकेगा।

पंडिताइन ने सचेत होते हुए गोनू झा से पूछा - 'कोई सपना देख लिए क्या कि अचानक आधी रात में लाखों का नुकसान की बात करने लगे?'

गोनू झा ने कहा - 'अरे पंडिताइन। समझो कि अपने भाग्य जग गए। मैं जो एक पोटली सेंबल के बीज लाया था, वह कहाँ हैं?'

पंडिताइन इस बेतुकी बात पर फिर झल्ला पड़ी। 'ओ! यह क्या बात हुई? आधी रात में सोए से जगाया? कहने लगे लाखों का नुकसान हो जाएगा, जैसे कोई हीरा - मोती, जर जेवरात की बात हो और अब पूछ रहे हो, संबल के बीज कहाँ हैं ? कहीं दिमाग तो नहीं फिर गया है?'

गोनू झा ने पंडिताइन को डपट दिया - 'अरे! फालतू बकवास में मत पड़। यह बता कि सेंबल के बीज कहाँ हैं?'

पंडिताइन गोनू झा के तेवर देखकर सहम गई और बिसूरती हुई बोली - 'बाहर ओसारे की बनेरी में बीज की पोटली बँधी हुई है।'

गोनू झा ने बिगड़ते हुए कहा - 'अरे, उस पोटली को तूने इतनी लापरवाही से रखा?'

पंडिताइन को भी गुस्सा आ गया और वह भी तेज आवाज में बोल पड़ी - 'दू पाई का भी होगा वह सेंबल का बीज, मैं क्या उसे तिजोरी में रखती? काहे आधी रात में टँटा खड़ा कर रहे हो?'

चोर साँस रोके गोनू झा और पंडिताइन के बीच हो रही बातचीत को सुन रहा था। उसे भी समझ में नहीं आ रहा था कि एक पोटली सेंबल के बीज के लिए गोनू झा इतना तड़क क्यों रहे हैं!

तभी उसके कान में गोनू झा की आवाज पड़ी - 'अरे भाग्यवान! अब वह सेंबल का बीज तिजोरी में ही रखा जाएगा। तुम्हें कुछ दिन - दुनिया की खबर भी है? एक यूनानी चिकित्सक ने सेंबल के बीज से जीवन रक्षक औषधि बनाई है और रातों-रात सेंबल के बीज की कीमत हीरों- जवाहरातों की तुलना में दो सौ गुना बढ़ गया है। जरा सोच, एक स्वर्ण मुद्रा में एक तोला सोना मिल जाता है कि नहीं? एक यूनानी व्यापारी आज ही महाराज के पास आया था। वह दो सौ स्वर्ण - मुद्राओं में एक तोला के भाव से सेंबल के बीज खरीदने की बात कर रहा था। उसी ने महाराज को बताया कि इस बीज से बनने वाली दवा से मरता आदमी भी जी उठेगा।

-जारी

• रोचक...

यूनाइटेड किंगडम

यूनाइटेड किंगडम बिना किसी एक लिखित संविधान वाले देश का सबसे बड़ा उदाहरण है। इसकी राजनीतिक व्यवस्था सदियों में धीरे–धीरे विकसित हुई है, ना कि किसी एक संवैधानिक दस्तावेज के जरिए स्थापित की गई। कानून बनाने और बदलने में ब्रिटिश संसद बड़ी भूमिका निभाती है। संसद द्वारा पारित कानून देश के संवैधानिक ढांचे का एक बड़ा हिस्सा है। 1215 का मैग्ना कोर्टा और 1689 का बिल ऑफ राइट्स जैसे ऐतिहासिक दस्तावेजों ने भी ब्रिटेन के संवैधानिक विकास को प्रभावित किया है। इन कानून के साथ–साथ अदालती फैसला और लंबे समय से चली आ रही राजनीतिक परंपरा यह तय करने में मदद करती हैं कि सरकार और दूसरी संस्थाएं किस तरह से काम करती हैं।

• बिजली

औद्योगिक सेक्टर दुनिया भर की बिजली का लगभग 42 फीसदी इस्तेमाल करता है। इससे यह दुनिया का सबसे बड़ी बिजली खपत वाला सेक्टर बन जाता है। मोटर, पंप, कंप्रेसर, भट्ठी और दूसरे भारी उपकरण को चलाने के लिए कारखाने को काफी ज्यादा बिजली की जरूरत होती है। इसके बाद घरों का सेक्टर आता है जो लगभग 27 फीसदी बिजली का इस्तेमाल करता है। इसी के साथ कमर्शियल गतिविधि में लगभग 21 फीसदी बिजली खर्च होती है। औद्योगिक बिजली की खपत का एक बड़ा हिस्सा इलेक्ट्रिक मोटर की वजह से होता है।